11-07-2020

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
B.A 1st year paper I
Topic - Basic principles of political Theory
Topic - Nature, scope and significance of political Theory
Lecture - 6.5

Nature, scope and significance of political theory.

राजनीति विज्ञान का स्वरूप (Nature of political Science)

राजनीति विज्ञान के समर्थक राजनीति के अध्ययन को एक स्वाधीन विषय के रूप में विकसित करना चाहते हैं। वे यह तर्क देते हैं कि राजनीति का अध्ययन प्राकृतिक विज्ञानों (Natural science) - जैसे कि भौतिकी (Physics) और जीवविज्ञान (Biology) की तरह तथ्यों (Facts) का पता लगाने और उनमें परस्पर सहसंबंध (Correlation) स्थापित करने के उद्देश्य से करना चाहिए अर्थात इसके अंतर्गत राजनीतिक तथ्यों के संबंध में सामान्य नियमों (General laws) का निरूपण होना चाहिए ताकि उनके आधार पर यथार्थ राजनीति की व्याख्या की जा सके।

राजनीति के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग जरूरी है। वैज्ञानिक पद्धति के अंतर्गत इस प्रक्रिया (Procedure) का अनुसरण करते हैं:

(क) निरीक्षण (observation)
(ख) सामान्यीकरण (Generalization)
(ग) (1) Inductive method (आगमन पद्धति)
(2) Deductive method (निगमन पद्धति)

(ग) व्याख्या (Explanation)
(घ) भविष्यवाणी और निर्देश (Prediction and prescription)

राजनीति-दर्शन का स्वरूप (Nature of political philosophy) -

राजनीति विज्ञान का सरोकार यथार्थ (Real) या तथ्यों (facts) से है जबकि राजनीति दर्शन का सरोकार तथ्यों के साथ-साथ आदर्शों (ideals) मानकों (norms) और मूल्यों (values) से भी है।

राजनीति-सिद्धांत का विचारक्षेत्र (Scope of political Theory) - राजनीति-सिद्धांत के अंतर्गत राजनीति (politics) के भिन्न-भिन्न पक्षों (Aspects) का अध्ययन किया जाता है। राजनीति का संबंध मनुष्यों के सार्वजनिक जीवन (public life) से है। समाज की सारी संस्थाओं में केवल राजनीतिक प्रबंध (Political Arrangement) ऐसा विषय है जिसका सरोकार संपूर्ण समुदाय (community) से है - किन्हीं गिने-चुने व्यक्तियों या समूहों से नहीं। मतलब यह कि राजनीतिक प्रबंध के अंतर्गत समाज के सारे सदस्यों के ऊपर सत्ता (Authority) का प्रयोग किया जाता है, सबके लिए नियम (Rules) बनाए जाते हैं और निर्णय (Decisions) ० किए जाते हैं, सबके अधिकार (Rights) कर्तव्य (Duties) और दायित्व (obligation) निर्धारित किए जाते हैं, और सार्वजनिक जीवन को उन्नत करने के उपाय किए जाते हैं। ये नियम और निर्णय हम सबके जीवन को दूर-दूर तक प्रभावित करते हैं। ऐसे निर्णय किस प्रक्रिया (Process) का परिणाम होते हैं, और इस प्रक्रिया में किन तात्विक नियमों (Principles) का पालन होना चाहिए - यह राजनीति-सिद्धांत की मुख्य समस्या है।

यह समस्या मानव सभ्यता के शुरू से ही उसकी चिंता का विषय रही है। यह बात महत्वपूर्ण है कि मनुष्य अपने स्वभाव से ही उत्तम जीवन (Good Life) की तलाश करता है, और उसमें अपने जीवन को उन्नत करने की अनंत संभावनाएं पाई जाती हैं। परंतु कोई भी समाज-व्यवस्था सर्वगुणसंपन्न (Perfect) नहीं होती। इसलिए प्रचलित व्यवस्था की आलोचना (criticism) शुरू हो जाती है, और नई व्यवस्था के निर्माण के सुझाव आने लगते हैं। साधारणतः कोई प्रतिभाशाली विचारक इस आलोचना और पुनर्निर्माण (Reconstruction) की योजना को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। ये सारी अभिव्यक्तियां राजनीति-सिद्धांत की परंपरा का निर्माण करती है।

राजनीति-सिद्धांत के तीन प्रमुख कृत्य (Function) स्वीकार किए जाते हैं: (1) वर्णन (Description) (2) समालोचना (criticism) और (3) पुनर्निर्माण (Reconstruction).

इनमें से वर्णन का कृत्य राजनीति विज्ञान (Political Science) के क्षेत्र में आता है, समालोचना और पुनर्निर्माण के कृत्य राजनीति-दर्शन (Political Philosophy) के क्षेत्र में आते हैं। अतः राजनीति-सिद्धांत के दो मुख्य अंग हैं: (1) राजनीति विज्ञान (2) राजनीति दर्शन। राजनीति-सिद्धांत के स्वरूप को समझने के लिए इन दोनों अंगों के स्वरूप की जानकारी जरूरी है। कुछ विचारक इन दोनों में से किसी एक पक्ष को राजनीति-सिद्धांत का सार-तत्व मानते हैं, कुछ दूसरे को। परंतु गहराई में जाकर देखने से पता चलता है कि राजनीति का संपूर्ण ज्ञान विकसित करने में ये दोनों तत्व परस्पर पूरक (Complementary) भूमिका निभाते हैं।